* आधुनिक पाश्चात्य दर्शन : बुद्धिवाद (Rationalism)

* देकार्त (Descartes)

देकार्त को आधुनिक दर्शन का नहीं, वरन आधुनिक दार्शनिक प्रणाली का पिता (Father of modern method) मानते हैं क्योंकि देकार्त ने सर्वप्रथम दर्शन के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रणाली (Scientific method) को जन्म दिया।

- देकार्त गणितज्ञ होने के नाते दर्शन में भी सत्य ज्ञान खोजने का प्रयास किये। दर्शन का लक्ष्य है सत्य की खोज। सत्य के दो रूप हैं – स्वतःसिद्ध और प्रमाणजन्य

(i) स्वतःसिद्ध सत्य का साधन है निर्विकल्प अतीन्द्रिय अनुभूति

(ii) प्रमाणजन्य सत्य का साधन है सविकल्प बुद्धि।

- देकार्त की दार्शनिक पद्धति है सन्देह की। किन्तु वे सन्देहवादी (Sceptic) नहीं हैं, वे हैं कट्टर बुद्धिवादी। सन्देह उनके लिए साधन मात्र है, साध्य नहीं।

* दर्शन का उद्गम संशय है। ग्रीक युग में प्लेटो ने कहा था कि – "ज्ञान का उद्गम आश्चर्य है" (Philosophy begins in wonder)। मध्ययुग में शास्त्रीय विचारक कहते थे कि "ज्ञान का उद्गम विश्वास है" (Credo ut Intelligam)। आधुनिक युग में देकार्त ने कहा – "ज्ञान का उद्गम सन्देह है" (Dubito ut Intelligam)।

- देकार्त का तात्पर्य है – "संशयेन विजानाति संशयात्मा विनश्यति" अतः सन्देह देकार्त के दर्शन का आदि है, अन्त नहीं।

"मैं सोचता हूँ, अतः मेरी सत्ता अनिवार्य है।" (Cogito Ergo Sum)

- संत आगस्टाइन ने भी यही कहा था – "यदि मैं अपना निराकरण करूँ तो भी मेरी सत्ता अनिवार्य है" (Si fallor sum)

- कैम्पानेला ने भी यही कहा था – "मैं सोचता हूँ, अतः मैं स्वतःसिद्ध हूँ।"

- देकार्त ने स्पष्ट कर दिया – "स्वसंवेदन का निषेध नहीं हो सकता।" अतः आत्मा की सत्ता स्वतःसिद्ध है।

* देकार्त के दर्शन को हम बुद्धिवाद, रूढ़िवाद, ईश्वरवाद, द्वैतवाद और क्रियाप्रतिक्रियावाद संयोगवाद कह सकते हैं।

- देकार्त बुद्धिवादी है, क्योंकि वे ज्ञान का साधन प्रत्यक्ष या आगमन को न मानकर बुद्धि को मानते हैं। गणित के ज्ञान को वे आदर्श मानते हैं और वे ज्ञान का उद्गम इन्द्रियानुभव में न मानकर बुद्धि में मानते हैं।
- वे रूढ़िवादी हैं क्योंकि चर्च की बहुत सी मान्यताएँ उन्हें मान्य हैं।
- वे ईश्वरवादी हैं क्योंकि वे ईश्वर में विश्वास करते हैं तथा ईश्वर को जगत का निमित्तकारण मानते हैं।
- वे द्वैतवादी हैं, क्योंकि वे चित्त और अचित्त की सापेक्ष परस्पर स्वतंत्र, किन्तु ईश्वर परतंत्र तत्वों की पृथक पृथक सत्ता स्वीकार करते हैं।
- वे चिदचित् संयोगवादी हैं, क्योंकि उनके अनुसार इन दोनों तत्वों का एक ही दूसरे से संयोग होता है और एक ही क्रिया के कारण दूसरे में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है।

* देकार्त ने पदार्थों के तीन विभाजन किये हैं – द्रव्य, गुण और पर्याय।
- द्रव्य (Substance) वह है जिसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता है और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य की अपेक्षा न हो।
- गुण - द्रव्य के अपृथकसिद्ध (Inseparable) और स्वरूप (Essential) धर्मों को गुण (Attributes) कहते हैं।
- पर्याय - अन्य आगन्तुक (Accidental) धर्म पर्याय कहलाते हैं।
- द्रव्य तत्व है, क्योंकि उसकी वास्तविक और स्वतंत्र सत्ता है।

* देकार्त ने तीन तत्व माने हैं – ईश्वर, चित्त और अचित्त।
- भारतीय दर्शन में विशिष्टाद्वैत भी तीन ही मानते हैं।
- देकार्त जैन, सांख्य, न्याय के समान अनेकजीववाद को मानते हैं।
- देकार्त के अनुसार चिदचित्संयोगवाद अर्थात चित्त और अचित्त में परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया का संबंध है। क्रिया एवं प्रतिक्रिया के बीच एक विशेष ग्रंथी 'Pineal Gland' काम करता है। अतः देकार्त देह मन अन्तक्रियावाद (Mind-body interactionalism) सिद्ध करते हैं।

* देकार्त बौद्धिक ज्ञान को जन्मजात (Innate Idea) मानते हैं।

नोट → बौद्धिक आत्मा का ज्ञान भी अनुभव निरपेक्ष (Independent) होते हैं।

* देकार्त ईश्वर के अस्तित्व को स्वतःसिद्ध मानते हैं तथा उसके लिए कुछ प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं —
(1) कार्य-कारणमूलक तर्क (causal proof) -
(2) सत्तामूलक तर्क (ontological proof) -
(3) सृष्टिमूलक तर्क (consmological proof) -
(4) निगमनात्मक तर्क (deductive proof) :-

* न्याय दर्शन में प्रसिद्ध दार्शनिक श्री उदयनाचार्य ने ईश्वर सिद्धि के लिए 'न्याय कुसुमांजलि' का श्लोक देते हुए कुछ कुल नौ (9) प्रमाण दिये हैं।

* देकार्त की प्रमुख कृतियाँ —
डिस्कोर्स ऑन मेथड
दी मेडिटेशन्स
दी प्रिन्सिपल्स ऑफ फिलॉसफी
दी पैशन्स ऑफ दी सोल